मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 4

MHD–01

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि

(एम. ए. हिन्दी) (एम. एच. डी.)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2024

एम.एच.डी.-01 : हिन्दी काव्य—I

(आदि काव्य, भक्ति काव्य एवं रीति काव्य)

समय : 2 घण्टे *अधिकतम अंक : 50*

नोट : *कुल* ***चार*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए।* ***प्रथम*** *प्रश्न अनिवार्य हैं। शेष प्रश्नों में से किन्हीं* ***तीन*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

---

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 2×10=20

(क) सुंदर सुरंग नैन शोभित अनंगरंग

अंग अंग फैलत तरंग परिमल के।

Downloaded from www.IGNOUBABA.com

वारन के भार सुकुमार को लचरा लंक

राजै परजंक पर भीतर महल के।

कहै पद्माकर बिलोकि जन रीझैं जाहि

अंबर अमल के सकल जल थल के।

कोमल कमल के गुलाबन के दल के

सु जात गढ़ि पाहन बिछौना मखमल के।

(ख) तब तौ छवि पीवत जीवत हे,

अब सोचन लोचन जात जरे।

हित पोष के तोष सु प्रान पले,

बिललात महा दु:ख दोष भरे।

घन आनंद मीत सुजान बिना,

सब ही सुख-साज-समाज टरे।

तब हार पहार से लागत हे,

अब आनि कै बीच पहार परे।

Downloaded from www.IGNOUBABA.com

(ग) नहिँ परागु नहिँ मधुर मधु, नहिं बिकासु इहिं काल।

अली, कली हि सौं बँध्यौ, आगै कौन हवाल॥

दृग उरझत, टूटत कुटुम जुरत, चतुर चित प्रीति।

परति गाँठि दुरजन हियै दई, नई यह रीति॥

(घ) हीरामनि देइ बचा कहानी। चला जहाँ पद्मावति रानी॥

राजा चला सँवरि सो लता। परवत कहै जो चला परवता॥

का परबत चढ़ि देखे राजा। ऊँच मँडप सोने सब साजा॥

अमृत सदाफर फरे अपूरी। औ तहँ लागि सजीवन मूरी॥

2. 'पृथ्वीराज रासो' की प्रामाणिकता निरूपित करते हुए उसके काव्यरूप और कथानक रूढ़ियों का विवेचन कीजिए। 10

3. विद्यापति का युग निर्धारित करते हुए उस दौर की राजनीतिक-सामाजिक परिस्थितियों का वर्णन कीजिए। 10

Downloaded from www.IGNOUBABA.com

4. घनानन्द के प्रेम सम्बन्धी दृष्टिकोण की विवेचना कीजिए। 10

5. तुलसीदास की सामाजिक चेतना पर प्रकाश डालिए। 10

6. मीरा की काव्य-भाषा पर विचार कीजिए। 10

7. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए : 2×5=10

(क) कबीर के सिद्धों और नाथों का प्रभाव

(ख) 'पद्मावत' में लोकतत्त्व

(ग) सूर काव्य में प्रेमाभक्ति

(घ) मुक्तक काव्य परम्परा और बिहारी

× × × × × × ×

Downloaded from www.IGNOUBABA.com